निर्यात के समुद्री आहार उत्पादों का विविधीकरण और मूल्य जोड

[1] जी.आर. उणित्तान, निकिता गोपाल और वी. राधाकृष्णन नायर

सारांश

भारत से निर्यातित कृषि उत्पादों में सबसे ज्यादा वस्तु समुद्री उत्पाद है। राष्ट्रीय आमदनी में और कुल निर्यात में मात्स्यिकी क्षेत्र का योगदान क्रमशः 2.5 और 2.08 प्रतिशत है। आर्थिक व्यवस्था के खुलने के कारण समुद्री उत्पादों के निर्यात की चुनौती और सुयोग भी बढ गए हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए विविधीकरण और मूल्य जोड को महत्वपूर्ण योजना के रूप में लिया गया है जिस की चर्चा इस पर्चे में हुई है।

प्राक्कथन

देश के आर्थिक विकास में मात्स्यिकी क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 2003-04 में राष्ट्रीय आय में मात्स्यिकी का योगदान 20000 करोड़ रुपयों से भी ज्यादा था, जो कि देश के कुल GDP का 1.5% है। यह एक जबरदस्त आय है और रोजगार उत्पन्न करनेवालों के रूप में माना जाता है जो कि सैकड़ों ग्रामीण लोग, खासकर महिलाओं की सामाजिक - आर्थिक स्थिति को प्रोत्साहित करता है। पिछले साल कृषि उत्पादों के निर्यात में समुद्री उत्पाद सबसे ज्यादा निर्यात किया गया है जो कि 6068 करोड़ रुपया था। पिछले पांच सालों में 03-04 में समुद्री उत्पादों के निर्यात के गुण में 36% वृद्धि हुई, रुपए के हिसाब में 31.7% और डालर के हिसाब में 20.2% वृद्धि हुई।

हालांकि भारत सरकार की नई व्यापार नीति जो कि वैश्वीकरण पर बल देता है, चुनौतियाँ और सुयोग प्रदान करता है। चुनौतियाँ सख्त गुणता स्तर के शर्त के कारण और सुयोग इसलिए कि नई विश्व व्यापार खुल रहे हैं। समुद्री निर्यात की वृद्धि को उपयुक्त विपणन योजना द्वारा

1. मुख्य वैज्ञानिक, केन्द्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचिन-29

बनाए रखना चाहिए। तेजी से बढ़ते व्यापार के संदर्भ में विविधीकरण और मूल्यजोड़ के महत्व पर अध्ययन प्रस्तुत है।

सामग्री और तरीके

इस अध्ययन के लिए प्राइम पत्रिका के भिन्न अंकों, समुद्री उत्पाद निर्यात के आंकडे और वाणिज्य विभाग, भारत सरकार के वेब साइट आदि गौण स्रोतों से आधार सामग्री इकटठा की गई है।

विविधीकरण किस लिए

मत्स्यिकी निर्यातों को बनाए रखने और बढाने में विविधीकरण एक प्रभावकारी योजना है। विविधीकरण केवल उत्पादों के लिए ही नहीं लागू हाते। यह बाज़ार के विविधीकरण द्वारा भी प्राप्त किया जा सकता है। यह भिन्न बाज़ारों को जोड सकता है ताकि निर्यातित उत्पाद के आधार का विस्तार हो। भिन्न इलाकों में उपभोक्ता सहज उत्पादों को पहचानकर उसका विपणन किया जाना चाहिए। भिन्न बाज़ारु शक्तियों के रहते, कहीं-कहीं समस्याएँ होगी जो कि प्रत्याशित बाज़ार और उत्पादों को बुरी तरह प्रभावित करेगा। इन परिस्थितियों में खतरा विमुखता के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में विविधीकरण का उपयोग हो सकता है। स्थायी आधुनिक विपणन योजनाओं के परिमामस्वरूप 200 से अधिक भारतीय समुद्री उत्पादों को 79 राज्यों में निर्यातित किया जाता है।

मूल्य ज़ोड़ की भूमिका

मूल्य ज़ोड आय की वृद्धि करता है क्योंकि यह मूल उत्पाद के मूल्य को बढ़ाता है। वस्तुतः मूल्य ज़ोड और विविधीकरण प्रशंसात्मक है। यह निर्यात की मात्रा और मूल्य में वृद्धि लाने में सहायकर होता है। मुख्यतः यह भारत के तटीय इलाकों में खासकर महिलाओं के लिए रोज़गार उत्पन्न कराती है। यह उत्पाद विकास के लिए जरूरी नई प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में सहायक होता है। बड़ी मात्रा में कारीगर की जरूरत पड़ेगी और मूल्य जोड मानवसंसाधन विकास में भी सहायक होती है। आधारिक संरचना में निवेश से मत्स्यन संसाधन उद्योग में आर्थिक प्रक्रिया होगी।

समुद्री आहार EXIM निर्यात-आयात नीति

सरकार की नई EXIM नीति निर्यात के मात्राओं पर रोक लगाती है। इस नीति के तहत

खास किस्म के कच्छे माल का निर्यात करनेवाले निर्यातक ऐसा कर सकते हैं, ताकि वे माल को पुनःसंसाधित कर सकते हैं और मूल्य जोड़ कर सकते हैं और इसका निर्यात भी कर सकते हैं। इस नीति के अनुसार अनुज्ञा के बिना 125 जाति/वर्ग के मत्स्यों का आयात किया जा सकता है। व्हेल शार्क और उसके भाग और जाति के उत्पादों का आयात पर रोक लगी है। के मा प्रौ सं द्वारा किए नए अध्ययन द्वारा यह पता चला कि केरल के मत्स्यन संसाधन कारखानों में उसकी क्षमता के 20% का ही ही उपयोग हो रहा है। समुद्री इलाकों में स्थित राज्यों में कुछ अनुपात के फर्क को छोड़ दें तो स्थिति बिल्कुल एक सा ही है। इसका प्रमुख कारण कच्चे माल की आपूर्ति को रोक दिया जाएगा। यही नहीं हाल ही में इंधन के दाम में बढौतरी से यंत्रीकृत मत्स्यन में कम मुनाफा ही मिलता है। इससे मत्स्यन प्रक्रिया कम हुई है और अवतरण भी कम हो गई है। संसाधन के लिए ज़रूरी कच्चे माल का प्रमात्रा के संबंध में चर्चा तभी हो सकती है जब EXIM पालिसी का कार्यान्वयन हों और आयात की अनुमति दें। इससे धारिता का उपयोग बढ़ेगी और ज्यादा मूल्य ज़ोड़ उत्पाद का निर्यात होगा। तटीय इलाकों में भारी मात्रा में रोज़गार के अवसर बढ़ेगा, खासकर गरीब और महिलाओं के लिए जो मत्स्य संसाधन उद्योग से सक्रिय रूप में संबंध है। सरकार ने भी मत्स्य संसाधन और निर्यात में कुल गुणता प्रबंधन की धारणा को प्रोत्साहित करने हेतु प्रमुख योजनाएँ बनाई हैं।

भारतीय समुद्री आहार निर्यात की स्थिति

2002-2003 (सारणी-1) में भारतीय आहार निर्यात सबसे ज्यादा भी 6881.31 करोड़ (1424.90 मिलियन) रहा।

सारणी 1: भारत के समुद्री आहार निर्यात के गुण एवं मूल्य

वर्ष	गुण मेट्रिक टन	मूल्य रु. करोड़	मूल्य अमरीकी $ मिलियन
1999-00	340003	5095.73	1184.23
2000-01	440473	6443.89	1416.32
2001-02	424470	5957.05	1253.35
2002-03	467297	6881.31	1424.90
2003-04	415017	6091.95	1330.76

2003-2004 में जापान को पूर्वी तट से संवर्धित झींगा के निर्यात में गुणता से संबंधित कुछ समस्याएँ और अमरीका द्वारा क्षेपण विरोध को थोपने के कारण निर्यात के गुण में 11.83% और मूल्य में 11.47 % कमी हुई।

के मा प्रौ सं ने उपयुक्त मॉडलों द्वारा भविष्यवाणी की कोशिश की और बेस लाईन दृश्य के अधीन उत्पादन 8 मिलियन मेट्रिक टन में वृद्धि होगी और समुद्री उत्पादों का निर्यात 11.75 लाख मेट्रिक टन जो कि 2015 तक 17400 करोड़ होगा।

भारत के निर्यात में हिमीकृत झींगा की प्रधानता है जो कि गुणता में 31.50% और मूल्य में 65.88% है। इसके बाद हिमीकृत फिन मत्स्य आता है जो कि गुण में 33.50% और मूल्य में 65.88% है। इसके बाद हिमीकृत फिन मत्स्य आता है जो कि गुण में 33.50% और मूल्य में 10.19% है (सारणी 2) यह ध्यान दिया जाय कि हिमीकृत झींगा जो कि भारतीय समुद्री उत्पादों के निर्यात में सबसे ज्यादा थी 87.68% गुण के हिसाब से जो कि 30 सालों में 31.5% बन गया। हिमीकृत फिन मत्स्य, हिमीकृत कटल मत्स्य ओर स्कविड निर्यात के महत्वपूर्ण एटम बन गए।

सारणी 2 मदवार समुद्री आहार निर्यात 1975, 2003-04 एक तुलना

चीज	1975 मात्रा (%)	2003-04 मूल्य (%)		
हिमीकृत झींगा	87.68	89.63	31.5	65.88
हिमीकृत फिन मत्स्य			33.5	10.19
हिमीकृत लाबटर पूंछ	0.75	1.5		
हिमीकृत में ढक पैर	2.47	2.67		
हिमीकृत सी एफ			9.61	7.14
हिमीकृत स्किविड			9.18	6.12
डिब्बाबंदित झींगा	0.49	0.57		
सूखा झींगा	0.18	0.11		

सूखा मत्स्य	4.3	0.86		
सूखी चीजें			3.05	2.39
जिंदा चीजें			0.57	0.84
शार्क फिन	0.57	0.94		
हिमीकृत चीज			0.92	1.05
अन्य	3.56	3.42	11.67	6.39
कुल	100	100	100	100

सारणी 3: मदवार समुद्री आहार अप्रेल-मार्च (03-04)

चीज	मात्रा	मूल्य	मूल्य
हिमीकृत झींगा	129768	4013.07	876.64
हिमीकृत फिन मत्स्य	138023	620.73	135.82
हिमीकृत सी एफ	39610	435.18	94.92
हिमीकृत स्किविड	37832	372.92	81.00
सूखी चीजें	12574	145.68	31.69
जिंदा चीजें	2341	51.1	11.15
हिमीकृत चीज	3779	64.04	14.00
अन्य	48090	389.23	85.54
कुल	412017	6091.95	1330.76

2003-04 में हमारी समुद्री उत्पादों का मूल्य के आधार पर सबसे बड़ा बाज़ार अमरीका था जिससे जापान का स्थान दूसरा हो गया। (सारणी 4) गुणता के हिसाब से चीन का प्रथम स्थान है, 30.03 %। हालांकि मूल्य के हिसाब से चीन की हिस्सा रुपयों में 11.1% और डालर में 11.39% है।

सारणी 4: राज्यों के आधार पर समुद्री आहार निर्यात

देश	मात्रा मूल्य (मेट्रिक टन)	मूल्य (रु. करोड़)	US $ मिलियन
जापान	50020	1163.69	253.86
अमरीका	53153	1682.06	365.84
यूरोपियन यूनियन	96284	1470.99	319.95
चीन	123738	676.46	151.60
दक्षिणपूर्वी एशिया	50670	545.77	119.13
मिडिल ईस्ट	14711	201.52	43.93
अन्य	23441	351.46	76.76
कुल	412017	6091.95	1330.76

सारणी-5 में भारतीय समुद्री आहार निर्यात का एकक मूल्य वसूली प्रस्तुत किया गया है। यह देखा गया है कि पिछले पांच सालों में एकक मूल्य वसूली 3.2$ कि ग्राम के इर्द-गिर्द स्थगित है। इससे यह सूचना मिलती है कि भारतीय समुद्री उत्पादों में मूल्य ज़ोड़ की बहुत संभावनाएँ हैं।

सारणी-5 भारतीय समुद्री आहार निर्यात का एकक मूल्य

साल	रु	$
1999-00	149.87	3.49
2000-01	146.29	3.22
2001-02	140.36	2.95
2002-03	147.26	3.05
2003-04	147.96	3.23

क्या समुद्री आहार निर्यात विवधीकृत है?

1960 के अंत तक भारत से निर्यात समुद्री उत्पादों में सूखा मत्स्य, सूखा झींगा, शार्क फिन, मत्स्य मॉ आदि सूखे चीज़ों का ज्यादा निर्यात हुआ है। 1953 में हिमीकृत चीजों का निर्यात छोटी मात्रा में हुई। 1961 से सूखे उत्पादों के निर्यात में कमी हुई और संसाधित चीजों के निर्यात में वृद्धि हुई। 1966 में भारतीय मुद्रा का मूल्य घट जाने से हिमीकृत और डिब्बाबंदित में बहुत वृद्धि हुई। विकास शील देशों के पारंपरिक व्यापारियों से भारतीय उत्पादों के लिए बाज़ार विकसित देशों में जल्दी से बढा।

निष्कर्ष

निर्यात बाज़ार में सार्वभौम प्रतियोगिता के चलते भारतीय समुद्री उत्पादों की संभावना ज्यादातर उत्पाद विविधीकरण और उच्च गुण बनाए रखने में होता है। नई EXIM नीति निश्चित रुप से मूल्य ज़ोड की अवधारणा को बढ़ाता है जिससे ज्यादा राशि मिलेगी और इस क्षेत्र में अतिरिक्त रोज़गार बढ़ेगा।

◆◆◆